इश्वर के बारेमें (१)

धरतीका कागज करुं, कलम करुं वनराय;
सात समुद्रकी साहि करुं, हरिगुण लिखा न जाय।

(२)

भारी कहुं तो में डरुं, हलका कहुं तो जीठ;
में कया जानुं रामको, नैना कबहु ना दीठ।

(३)

अैसा कोइ ना मिला, घटमे अलख लखाय;
बिन बात्ति बिन तेल बिन, जलती जोत दिखाय।

(४)

देखा हय तो किसे कहुं, कहे कोन पतियाय;
हरि जैसाका तैसा हय, हरख हरख गुन गाय।

(५)

साहेब तेरी साहेबी, सब घट रही समाय;
ज्युं मेहदीके पातमे, लाली लखी न जाय।

(६)

खालेक बिन खाली नहीं, सुई घरनको ठोर;
आगे पिछे राम हये, राम बिना नहि और।

(७)

ज्युं नेननमे पुतली, युं खालेक घट मांहे;
भुला लोक न जानहि, बाहेर ढुंढन जाये।

(८)

करतुरी कुंडल बसे, मृग धुंठे बन मांहि;
अैसे घट घट राम हय, (पर) दुनियां देखे नाहि।

(९)

घट बिन कहां न देखीये, राम रहा भरपुर;
जिन जाना तिन पास हय, दुर कहा उन दूर।

(१०)

बाहेर भित्तर राम हय, नेननका अभिराम;
जित देखुं तित राम हय, राम बिना नहि ठाम।

(११)

ज्युं पथ्थरमे हय दवता, युं घटमे हय किरतार;
जो चाहो दिदार को, तो चकमक होके जार।

(१२)

पावक रुपी राम हय, सब घट रहा समाय;
चित्त चकमक लागे नहिं, धुंवा बहिं बहिं जाय।

(१३)

सांइ तेरा तुंजमे रहे, ज्युं पथ्थरमे आग;
जोत सरुपी राम हय, चित्त चममक हो लाग।

(१४)

परदेशा खोजन गया, घर हिराकी खांण,
काच मनिका पारखुं, क्युं आवे पहेछांन ?

(१५)

में जानुं हरि दुर हय, हरि हरुदय मांहि;
आडी त्राटी कपटकी, तांसे दीसत नाहि.

(१६)

जाको आडा अंतरा, ताको दीसे न कोय;
जान बुज जड हो रहे, बळ तज निर्बळ होय।

(१७)

भटक मुवा भेदी बिना, कोण बतावे धाम ?
चलते चलते जुग गयो, पाव कोसपर गाम.

(१८)

बसत कहां धुंडे कहां, किस बिध आवे हाथ;
कबिर ! तबहि पाइये, जब भेदी लिजे साथ।

(१९)

जा करण हम ठुंडते, और करते आस उमेद;
सो तो अंतर घत मिला गुरु मुख पाया भेद।

(२०)

हिरा हरिका नाम हय, हिरदे अंदर देख;
बाहेर भित्तर भरी रहा, अैसा अगम अलेख।

(२१)

बिषय प्यारी प्रीतडी, तब हरि अंतर नाहि;
जब हरि अंतरमे बसे, बिषयसे प्रीत नाहि ।

(२२)

भक्ति बिगाडी कामीयां, इंद्रि केरे स्वाद;
जन्म गमाया खाधमे, हिरा खोया हाथ.

(२३)

राम हय तहां काम नहि, काम नहि तहां राम;
दोनो एक जा क्युं रहे, काम राम एक ठाम ।

(२४)

जैसे माया मन रमे, तैसे राम रमाय;
तारा मंडऴ छांडके, जहां केशव त्यां जाय ।

(२५)

चेतन चौकी बेठ कर, मनमे राखो धीर;
निर्भय होके नि:शंक भज, केवऴ कहे कबीर ।

(२६)

लेह लागी निर्भय भया, भरम गया सब दूर;
बनमे बनमे कहां ढुडे, राम यहां भरपुर ।

(२७)

सबहि भूमि बनारसी, सब निर गंगा तोय;
ज्ञानी आत्मराम हय, जो निर्मऴ घट होय ?

(२८)

आपा खोये हरि मिले, हरि मिलत सब जाय;
अकथ कहांनी रामकी, कहे सो कोन पतियाय ?

(२९)

कबीर ! जब ए जग नहि, तब रहा एक भगवान;
जीने वोह देखा नजरसे, सो रहा कोन मकान?

(३०)

हरिजन हरि तो एक हय, जो आपा मिट जाय;
जो घरमे आपा बसे, तो साहेब कहां समाय ?

(३१)

तुं तुं करता तुं भया, तुं मांहे मन समाय,
तु मांही मन मिल रहा, अब मन अंत न जाय ।

(३२)

तुं तुं करतां तुं भया, मुजमे रही न "हुं"
वारी फेरुं नाम पर, जीत देखुं तित "तुं"

(३३)

राम, कबीरा एक हय, कहेन सुननको दोय,
दो कर जो जानसी, जाकु गुरु मिला न होय ।

(३४)

नाम कबीरा हो रहा, कलजुगमे प्रकाश;
सब संतनके कारने, नाम धराया दास.

(३५)

कबीर, कुत्ता रामका, मोती नाम धराय;
गले बिच दोरी प्रेमकी, जीत खेचे तित जाय ।

(३६)

दास कहावन कठण हय, में दासनको दास;
अब तो एसा हो रहुं, के पाउं तलेकी घास.

(३७)

जो देखा सो तिनमें, चोथा मिले न कोय;
चोथेकुं प्रगट करे, हरिजन कहीए सोय ।

(३८)

जो एक न जानीया, तो बहु जाने क्या होय ?
एकै ते सब होत हय, सबसे एक न होय ।

(३९)

एक साधे सब सधे, सब साधे एक जाय;
जो तुं सिंचे मूलको, फले फले अघाय ।

(४०)

सब आये इस एकमे, डार पात फऴ फुल;
कबिर ! पीछे क्या रहा, ग्रही पकरा निज मूऴ ?

(४१)

मेरा मुजमे कछु नहि, जो कछु हय सो तेरा,
तेरा तुजको सोंपते, कया लगेगा मेरा.

(४२)

मेरा तो कोइ हय नहि, और में कीसीका नाहिं;
अंतर द्रष्ठ बिचारतां, राम बसे सब मांहिं ।

(४३)

कबीर ! खोजी रामका, गया जो सकल द्धिप;
राम बसे घट भित्तरा, जो आवे प्रतित ।

(४४)

सब धट भित्तर में बसुं, मोको मिले न कोय;
जो करुं सो में करुं, नाम बंदेका होय,

(४५)

सब घट मेरा साइयां, खाली घट नहि होय;
बलिहारी उस घटकी, जा घट प्रगट होय ।

(४६)

चोंसठ दिवां जोड कर, चउदे चंदा मांहि;
तिस धर कैसा चांदना, जीस धर गोविंद नाहिं ?

(४७)

कोइ एक पावे संतजन, जा के पांचो हाथ;
जाको पांचो वश नहि, ताको हरि संग न साथ ।

(४८)

कबीरा ! हदके जीवको, हित कर मुख ना बोल;
जो हद लगा बेहदसे, तासे अंतर खोल ।

(४९)

हदमे रहे सो मानवि, बेहुद रहे सो साध;
हद बेहद दोनो तजे, ताका मता अगाध ।

(५०)

हद छांडी बेहद गया, अवर किया विश्राम;
कबीरा जासुं मिल रहा, सो कहीये निज काम ।

(५१)

हदमे बेठा कथत हय, बेहदकी गम नाहि;
बेहदकी गम होयगी, तब कथनेको कछु नाहिं ।

(५२)

देखन सरीखी बात हय, कहेन सरीखी नाहि;
ऐसा अदभूत समजके, समज रहे मन माहि ।

(५३)

बीन धरतिका गाम हय, बिन पंथका देश,
बिन पिंडका पुरुष हय, कहे कबीर उपदेश ।

(५४)

कबीर चल जाय था, पुछ लिया एक नाम;
चलता चलता तहां गया, जहां गाम नाम नहि ठाम

(५५)

कौतक देखा देह बिन, रवि ससि बिन उजास;
साहेब सेवामे रहे, बेपरवा हि दास ।

(५६)

धरति गगन पवन नहिं, नहिं तुंब्बा नहिं तार;
तब हरिके हरिजन था, कहे कबीर बिचार ।

(५७)

देखा एइ अगम धनी, महिमा कही न जाय;
तेज पुंज प्रगट धनी, मनमे रहा समाय ।

(५८)

दिपक देखा ज्ञानका, पेखा अपरम देव;
चार वेदको गम नहि, तहां कबीरा सेव ।

(५९)

वैकुन्ठ उपर बसत हय, मेरा साहेब सोहे;
जाके रुप न देख हय, सो अंतर मिल्या मोहे ।

(६०)

में था, तब हरि नाहिं, अब हरि हय में नाहिं;
सकल अंधेरा मिट गया, दिपक देखा माहिं ।

(६१)

करतम करता ना हता, ना हता हाट न पाट;
जा दिन कबीरा रामजन देखा औघट घाट।

(६२)

गुन इंद्रि सेहेजे गइ, सद्गुरु भयें सहाय;
घटमें, ब्रह्म बिराजया, बक बक मरे बलाय।

(६३)

कबीर हदका गुरु हय, बेहदका गुरु नाहिं;
बेहद आपे उपजे, अनभवके घर मांहिं।

(६४)

निराधार सो सार हय, निराकार निज रुप;
निश्चल जाको नाम हय,ऐसा तत्व अनूप।

(६५)

सुरतमें मूरत बसे, मूरतमे एक तत्;
ता तत् तत् बिचारया, तत्व तत्व सो तत्।

(६६)

जो अे तत्व बिचारके, रःखे हैयेमे सोय;
सो पांनि सुखको लहे, दुःख न दरसे कोय।

<u>जीव के बारेमे</u> (६७)

बिन बीजका वृक्ष हय, बिन धरती अंकुर;
बिन पानीका रंग हय, तहां जीवका मुर।

(६८)

हम वासी वहां देशके, जहां गाज रहा ब्रह्मन्ड;
अनहद बाजा बाजीया, अविचल जोत अखंड।

(६९)

आया एकहि देशसें, उतरा एकहि धाट;
बिचमें दुबधा हो गइ, सो हो गये बारेबाट।

(७०)

हम वासी वहां देशके, जहां जातवरण कुऴ नाहे;
शब्द मिलावा हो रहा, पर देह मिलवा नाहे।

(७१)

गेबी आया गेबसे, और यहां लगाइ एब;
उलट समानां गेबमे, तो मिट जाय सब एब।

(७२)

कबीर ! जात जातका पाहोना, जात जातमे जाय;
साहेब जात अजात हय, सो सबमे रहे समाय।

(७३)

करी करामत जगतकी, राज रीत बंधान;
साह्यो कियो तोहे सोंपके, आप छुपे करी आंन।

(७४)

एक बुंद ते सब किया, नर नारीका नाम;
सो तुं अंतर खोज ले, सकऴ ब्यापक राम।

(७५)

एक बुंद ते सब किया, ए देहका बिस्तार;
सो तुं क्युं बिसारीया, अंधे मुंढ गमार ?

(७६)

सब घट भित्तर राम हय, ऐसा आप सो जान;
आप आपसे बंधीया, आपे भया अजाण।

(७७)

पांच घाटका पिंजरा, सो तो अपना नहि;
अपना पिंजर तहां बसे, अगम अगोचर मांहि।

(७८)

सगा हमारा रामजी, सहोंदर हय पुनी राम;
और सहा सब सगमगा, कोइ न आवे काम।

(७९)

चल गये सो ना मिले, किसको पुछुं बात;
मात पिता सुत बांधवा, जुठा सब संगात।

(८०)

कया किया हम आयके, कया करेंगे जाय ?
इतके भयें न उतके भयें, चले सो मुल गमाय।

(८१)

कबीर ! या तन जात हय, शके तो ठोर लगाय;
के सेवा कर संतकी, के गोविंद गुण गाय ।

(८२)

कहां जाय कहां उपने, कहां बराये लाड ?
न जानुं किस रुख तले, जाय पडेंगे हाड ।

(८३)

आज काल दिन पंचमे, जंगल होगी बास;
उपर लोक हि फिरेंगे, ढोर चरेंगे धास ।

(८४)

राम नाम जाान्यो नहि, किया न हरिसें हेत;
तासे जनुनी भारे मुंई, पथ्थर पडया पेत ।

(८५)

हरिकी भक्ति बिनां, धिक जीवन संसार;
धुंवा केरा घोलरा, जात न वागे वार ।

(८६)

राम बिसारयो बावरा, अचरज किनो येह;
धन जोबन चल जायगा, अंत होयगी खेह ।

(८७)

मनखा जनम तोकु दीयो, भजवेको हरि नाम;
काहे कबीर चेत्यो नहि, लागो औरहि काम ?

(८८)

मनुष्य जन्म तोंको दियो, भजवेको गोवंद;
तुं अपने करने आपको, कहां बंधाये फंद ?

(८९)

मनुष्य जन्म तो दुर्लभ हय, नहि वारम वार;
तरवर ते फल गिर पडो, बहोर न लागे डार ।

(९०)

कासे सोवे निंदभर, जागी जप मोरार;
एक दिन अैसो सोवंगो, लांबे पांउ पसार ।

(९१)

कबीर ! केवल नामके, जब लग दिवे बात;
तेल धटा बाती बुजी, तब सोवे दिन रात ।

(९२)

मन तुं कैसा बावरा, तेरी शुद्ध क्युं खोय ?
मोत आये सिरपे खडा, धलते बेर न होय ।

(९३)

मन अपना समजाइ ले, आया गाफेल होय;
बिन समजे उठ जायगा, फोकट फेरा तोय ।

(९४)

मनखा जन्म पाय के, भजीयो न रधुपति राय;
तेली करो बेल ज्युं, फिर फिर फेरा खाय ।

(९५)

जग सारा दरिद्र भया, धनवंत भया न कोय,
धनवंत सोहि जानीये, राम पदार्थ होय ।

(९६)

राम नामकी लूट हय, लूट शके तो लूट
पिछेको पस्तायगो, जब तन जायगो छुट ।

(९७)

काल करे सो आज कर, आज करे सो अब;
अवसर बितो जाय ते, फिर करोगे कब ?

(९८)

काल कहे में काल करुं, आगे विसमी काल;
दो कालके बिच काऴ हय, शके तो आज संभाऴ

(९९)

आज कहे हरि काल भजुं काल कहे फिर काल;
आज कालके करतेहि, अवसर जाती चाल ।

(१००)

कबीर ! अपने पेहेरे जागीये, ना पर रहीए सोय;
ना जानुं छिन एकमे, किसका पेहरा होय ?

(१०१)

हरि हरि कर हुशयार रहे, कुडी गेल निवार;
जो पेंडे चलना तुंजे, सोहि पंथ संभार।

(१०२)

दिन गमाया दुनियामे, दुनिया चली न साथ;
पांय कुहाडा मारिया, गाफेल अपने हाथ।

(१०३)

कबीर ! गुजरी बिखकी, सौदा लिया बिकाय;
खोटी बांधी गांठडी, अब कछु लिया न जाय।

<u>माया</u> (१०४)

हरिकी भक्ति कर, तज मायाकी चोज;
बेर बेर न पाईये, मनखा जनमकी मोज।

(१०५)

कबीर ! माया पापनी, हरीसें करे हराम;
मुख कुडियाली कुमतकी, कहेने न दे राम।

(१०६)

में जानुं हरिको मिलुं, मों मनमे बडि आस;
हरि बिच पाडे आंतरा, माया बडि पिचास।

(१०७)

माया माथे शिंगडां, लंबा नव नव हाथ;
आगे मारे शिंगडां, पिछे मारे लात।

(१०८)

माया तरवर त्रिविधकी, शोक दुःख संताप;
शितलता स्वपने नहिं, फल फीको तन ताप।

(१०९)

कबीर ! माया मोहिनी, मांगी मिले न हाथ;
मन उतार जुठी करे, तब लग डोले साथे।

(११०)

कबीर ! माया सांपनी, जनताहिको खाय;
ऐसा मिला न गारुडी, पकड पिंठारे बाय।

(१११)

मायाका सुख चार दिन, ग्रहे कहां गमार ?
सुपनें पाया राज धन, जात न लागे वार।

(११२)

करक पडा मेदानमें, कुकर मिले लख कोट;
दावा कर कर लड मुंवे, अंत चले सब छोड ।

(११३)

हस्ती चढ कर जो फिरे, उपर चमर चढाय ;
लोक कहे सुख भोगवे, रहे तो दोजख मांय।

(११४)

रामहि थोरा जानके, दुनिया आगे दिन;
वोह रंकको राजा कहे, माया के आधिन।

(११५)

माया ऐसी शंखनी, सामी मारे शोध;
आपन तो रीते रहे, दे औरनको बोध।

(११६)

संसारीसे प्रीतडी, सरे न एको काम;
दुबधामे दोनो गये, माया मिली न राम।

(११७)

माया को माया मिले, लंबी करके पांख;
निर्गुनकी चिने नहिं, फुटी चारो आंख।

(११८)

गुरुको चेला बिख दे, जो गांठी होय दाम;
पुत पिताको मारसी, येह मायाके काम।

(११९)

जे माया संतो तजी, मुंढ ताहि ललचाय;
नर खाय कर डारे तो, स्वान स्वाद ले खाय।

(१२०)

माया हय दो प्रकारकी, जो कोइ जाने खाय;
एक मिलावे रामको, एक नर्क ले जाय।

(१२१)

उंचे डाली प्रेमकी, हरिजन बेढा खाय;
निचे बेढी वाघनी, गिर पडे सो खाय ।

(१२२)

माया दासी संतकी, साकुन्थकी शिर ताज;
साकुन्थकी शिर माननी, संतो सेहती लाज ।

(१२३)

कबीर ! माया डाकनी, सब कोइको खाय;
दांत उपाडे पापनी, झो संतो नेडी जाय ।

(१२४)

एक हरि एक मानिनी, एक भगत एक दास;
देखो माया क्या किया, भिन्नभिन्न किया प्रकाश ।

(१२५)

माया दीपक नर पतंग, भ्रमे भ्रमे पडंत;
कहे कबीर गुरु ज्ञानसे, एकांद उबरंत ।

(१२६)

कबीर ! माया पापनी, लोभे लुभाया लोग;
पुरी काहु न भोगवे, वांको एहि वियोग ।

(१२७)

तृष्णा सिंचे ना घटे, दिन दिन बढते जाय;
जवासाका रुख ज्युं, घने मेघ कमलाय ।

(१२८)

कामी अमृत न भावहि, लिख्या लिनी शोध;
जन्म गमाया खाधमें, भावे त्युं परमोघ ।

(१२९)

एक कनक अरु कामिनी, बिख्या फलकु पाय;
देखतहिसे बिख चढे, खाये ते मर जाय ।

(१३०)

सांधे इंद्रिय प्रबलकु, जेइसें उठे उपाध;
मन राजा बहेंकावते, पांचो बडे असाध.

(१३१)

माया माया सब कोई कहे, माया कहिये सोय;
जो मनसे ना उत्तरे, माया कहिये सोय ।

(१३२)

माया छोरन सब कोइ कहे, माया छोरी न जाय;
छोरनकी जो बात करे, तो बहोत तमाचा खाय ।

(१३३)

मन मते माया तजी, युं कर निकसा बहार,
लागी रही जानी नहीं, भटकी भयों खुंवार ।

(१३४)

माया तजी तो कया भया, मान तजा नहीं जाय,
माने बडे मनीवर गले, मान सबनको खाय ।

(१३५)

मान दियो मन हरख्यो, अपमाने तन छीन;
कहे कबीर तब जानीए, मायामे लौलीन ।

(१३६)

मान तजा तो कया भया, मनका मता न जाय;
संत बचन माने नहिं, ताको हरि न सोंहाय ।

(१३७)

माया छाया एक हय, जाने बिरला कोय ;
लागे ताके पिछे परे, सनमुख आगे होय ।

(१३८)

माया समी न मोहिनी, मन समा नहि चोर;
हरिजन समा न पारखु, कोइ न दीसे ओर ।

(१३९)

मायासे को मत मिलो, सब बहेलां दे बांय;
नारद सा मूनी गला, तो कहां भरोसा ताय?

(१४०)

सांकऴ हुं ते सब हय, येह माया संसार;
सो क्युं छुटे बापरे, जो बांधे किरतार ?

(१४१)

छोरे बिन छुटे नहि, छोरन हारा राम;
जीव जतन बहोतहि करे, पर सरे न एको काम ।

(१४२)

कबीर ! माया माहिती, जैसी मिठी खांड,
सद्‌गुरु कृपा भइ, नहि तो करती भांड ।

(१४३)

भला भया जो गुरु मिला, नहि तो होती हांण;
दिपक जोत पतंग ज्युं, पडता पुरी जांन ।

(१४४)

कबीर ! माया डाकनी खाया सब संसार;
खाइ न शके कबीरको, जाके राम आधार.

(१४५)

कबीर ! जुगकी क्या कहुं, भवजऴ डुबे दास,
पार ब्रह्म पति छांडके, करे दुनिकी आस ।

(१४६)

कबीर ! ए संसारको, समजावुं कंइ बार;
पुछज पकडे भेंसको, उतरा चाहे पार ।

(१४७)

जो तुं पडा हय फंदमें, निकसेगा कयुं अंध ?
माया मद तोकुं चढ, मत भुले मत मंद ।

(१४८)

माया बडि हय डाकनी, करे कालकी चोंट,
कोइ एक हरिजन उबरा, पार ब्रह्मकी ओट ।

(१४९)

कबीर ! काया पाहोनी हंस बटाउ माहे;
न जानुं कब जायगी, मोहे भरोसा नांहे ।

(१५०)

कहत सुनत झुग जात हय, बिषे न सुझे काऴ,
कबीर कहे रे प्रांनिया, साहेब नाम संभाऴ ।

काळ के बारेमें (१५१)

मुसा डरपे काऴसुं, कठण काऴका जोर;
स्वर्ग भु पातालमे, जहां जावे तहां घोर ।

(१५२)

फागण आवत देखके, मन झुरे बनराय;
जीन डाली हम क्रिजा किया, सोहि प्यारे जाय ।

(१५३)

पात झरंता देखके, हसति कुंपलियां;
हम चले तुम चालियो, धिरी बापलियां ।

(१५४)

पात झरंता युं कहे, सुन तरवर बनराय;
अबके बिछुरे कहां मिलेंगे, दूर पडेंगे जाय ?

(१५५)

फिर तरवरबी युं कहे, सुनो पात एक बात;
सइयां ऐसी सरजीयां, एक आवत एक जात ।

(१५६)

माली आवक देखके, कऴीयों करी पुकार;
फुल फुल तुंम चुंन लहो, काल हमारी बार ।

(१५७)

चक्कि फिरती देखके, दिया कबीरा रोय;
दो पुंठ बिच आयके, साबेत गया न कोय ।

(१५८)

आरे पारे जो रहा, जीना पीसे सोय;
खुंट पकडके जो रहे, ताको पीस शके न कोय ।

(१५९)

काऴ सिराने आ खडा, जाग प्यारे मित,
राम स्नेही बावरा, तुं कयुं सोय नचिंत ?

(१६०)

माटी केरा पुतला, माणस धर्या नाम;
दिन को चार कारणे, फिर फिर रोके ठाम ।

(१६१)

खड खड बोली ठिकरी, घड घड गये कंभार;
रावण सरखे चल गये, जो लंकाके सरदार।

(१६२)

धम्मन धमति रहे गइ, बुझ गये अंगार;
अेहरन ठबका रहे गया, जब उठ चला लोहार।

(१६३)

काची काया मन अस्थिर, थिर थिर काम करंत;
ज्युं ज्युं नर निधडक फिरे, त्युं त्युं काल हसंत।

(१६४)

काऴ हमारे संग रहे, कैसी जतनकी आस,
दिन दश राम संभार ले जबलग पिंजर पास।

(१६५)

पाव पलककी खबर नहीं, करे कालको साज,
काऴ अचानक झडपेंगा जयुं तीतरको बाज।

(१६६)

कबीर ! गाफेल कयुं फिरे, कयुं सोता घनघोर,
तेरे सिराने जम खडा, जयुं अंधियारे चोर।

(१६७)

कबीर ! जो दीन आज हय, सो दिन नाहिं काल,
चेत शके तो चेत ले, बीच पडी हय ख्याल।

(१६८)

या अवसर चेत्यो नहि, चुक्यो मोटी घात,
माटी मिलन कुंभारकी, बहोत सहेगो लात।

(१६९)

दरद न लेवो जातको, मुवा न राखे कोय;
सगा उसीको कीजीए, नेत निभावुं होय।

(१७०)

मनखा जनम पायके, जबलग भज्यो न राम;
जैसे कुवा जळ बिन बन्यो, तोको नहिं काम।

(१७१)

जुठे सुखको सुख कहे, मानत हय मन मोद;
जगत चबेना कालका, कछु मुखमे कछु गोद।

(१७२)

जो देखा सो विनाश हि, नाम धर्या सो जाय;
कबीर, ऐसा तत्व ग्रहो, जो सद्गुरु दिये बताय।

(१७३)

कबीर ! आया हय सो जायगा, राजा रंक फकीर,
कोइ सिंहासन चढ चले, कोइ बंध जात जंजीर।

(१७४)

संगी हमारे चल गये, हमबी जाने हार;
कागजने कछु बाकी हय, तासे लागी बार।

(१७५)

कबीरा थोडा जीवना, मांडा बहोत मंडांन;
सबहि छोडके चल गये, राजा रंक सुलतान।

(१७६)

काहे चुनावे मेडियां करते दोडा दोड ?
चिठ्ठी आइ रामकी, गये पलकमे छोड।

(१७७)

जीन घर नौबत बाजती, होते छब्बीश राग;
सो घरहि खाली पडे, बेठन लागे काग।

(१७८)

जीन घर नौबत बाजती, मंगल बांधे द्वारा;
एक हरिके नाम बिन, गया जनम सब हार।

(१७९)

कया करीये कया जोडीये, थोडे जीवनके काज;
छांडी छांडी सब जात हय, देह गेह धन राज।

(१८०)

एक दिन अयसा होयगा, कोइ कीसीका नाही;
घरकी नारी कोण कहे, तनकी नारी नाही।